हिन्दी में विज्ञान साहित्य

शिक्षा के संदर्भ में

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में पीएच-डी. की उपाधि प्राप्त की। टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुंबई के होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र में एसोशिएट प्रोफेसर। अनेक अलंकरणों से सम्मानित लोकप्रिय विज्ञान लेखक के रूप में आपके 300 से अधिक लेख तथा 24 पुस्तकें प्रकाशित हैं।

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र

शिक्षा और साहित्य परस्पर जुड़े हैं। किसी भाषा में विषयगत साहित्य के लिए यह जरूरी हो जाता है कि शिक्षा का माध्यम भी वह भाषा हो। साहित्य मौखिक होता है, तथा लिखित भी। मौखिक साहित्य प्रायः लोक में व्याप्त होता है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी तमाम रूपान्तरण के साथ चलता रहता है। भारत में विज्ञान और साहित्य के सम्बन्धों की चर्चा करते समय शिक्षा के समूचे परिदृश्य को समक्ष रखना पड़ेगा, तभी एक स्पष्ट तस्वीर बन सकेगी। इसके लिए हमें इतिहास में पीछे जाना पड़ेगा। जब हम यहाँ हिन्दी में विज्ञान साहित्य की चर्चा कर रहे हैं। यानी खड़ी बोली में विज्ञान साहित्य की चर्चा कर रहे हैं। हिन्दी भाषा का यह रूप भारतेन्दु युग से शुरू हुआ, ऐसा माना जाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवनकाल सन् 1850 से सन् 1885 तक रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि हिन्दी में विज्ञान लेखन का इतिहास भारतेंदु हरिश्चंद्र से थोड़ा पहले, यानी 1820 से शुरू होता है। इस तरह मान सकते हैं कि हिन्दी में विज्ञान साहित्य का इतिहास अधिकतम 200 वर्ष पुराना है। कुछ लोग बताते हैं कि हिन्दी में पहली विज्ञान रचना सन 1820 में हुई थी। पत्र-पत्रिकाओं तथा अखबारों के साथ ही विज्ञान साहित्य के सृजन की शुरुआत हुई। ऐसा माना जाता है कि हिन्दी का पहला अखबार कलकत्ता से निकलने वाला 'उदंत मार्तण्ड' था। अठारहवीं सदी में जो भी विज्ञान साहित्य था, वह अधिकांशतः लोकविज्ञान था। उस समय साहित्यिक पत्रिकाओं में विज्ञान लेखन को प्रमुखता दी जाती थी। साहित्यकार आम लोगों को विज्ञान के बारे में जानकारी देना अपना कर्तव्य समझते थे। औपनिवेशिक काल में यूरोपीय पुनर्जागरण तथा विज्ञान एवं तकनीकी की उन्नति के साथ समूचे यूरोप में भौतिक प्रगति हो रही थी। पश्चिमी विज्ञान जगत की खोजों, आविष्कारों को हिन्दी में लिखने वाले साहित्यकार पत्र-पत्रिकाओं के जरिये हिन्दुस्तानी समाज को बताते थे। रहस्य, रोमांच, तथा तिलिस्म की रचनाएं भारत में बहुत समय से प्रचलित रही हैं। उसी क्रम में विदेशी विज्ञान कथाओं की तर्ज पर हिन्दी में विज्ञान कथाएं लिखी गयीं। वे रचनाएं साहित्य की भाषा में विज्ञान की कृतियां थीं। विज्ञान को लेकर निबन्ध भी लिखे गये। इन प्रयासों को सामाजिक दायित्व के निर्वहन के तौर पर देखा जा सकता है। लेखकगण समाज में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार को पुनर्जागरण के रूप में देखते थे।

भारत में उच्च शिक्षा की औपचारिक शुरुआत

भारत में उच्च शिक्षा, विशेष कर के आधुनिक शिक्षा को सन् 1800 कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना से जोड़कर देखा जाता है। ध्यान रहे, कलकत्ता उस औपनिवेशिक काल में भारत की राजधानी थी। देश में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन था। सन् 1813 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में शिक्षा के लिए 1 लाख रुपये अनुदान के तौर पर देने की घोषणा की। उस समय यह प्रश्न उठा कि देश में उच्च शिक्षा का माध्यम क्या हो। उस समय तीन तरह की विचारधारा वाले लोग थे। एक वर्ग का मानना था कि उच्च शिक्षा का माध्यम अरबी/फारसी हों। दूसरी तरफ राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत वर्ग का मानना था कि माध्यम हिन्दी हो। तीसरा वर्ग अंग्रेजों तथा अंग्रेजीपरस्त लोगों का था जो मानता था कि यह माध्यम अंग्रेजी हो। लॉर्ड मैकाले अंग्रेजी का धुर समर्थक था। वह सन् 1834 में भारत आया। उसके प्रयासों से 7 मार्च 1835 को भारत में उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बना दिया गया। उस समय ब्रिटिश इंडिया का गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिंग था जो स्वयं आंग्लभाषा का पक्षधर था। अलबत्ता निचली कक्षाओं में विज्ञान तथा गणित की

शिक्षा के लिए छूट थी कि वे भारतीय भाषाओं में दी जा सकती हैं। इसलिए हिन्दी में मिडिल स्तर तक की विज्ञान विषयों की शिक्षा का माध्यम हिन्दी थी। उस समय तमाम संस्थाओं तथा व्यक्तियों ने विज्ञान तथा गणित की पुस्तकों के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। श्रीरामपुर मिशनरी, कलकत्ता बुक सोसायटी (1817), तथा आगरा बुक सोसायटी (1833) अंग्रेजी की पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने तथा पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान से हिन्दुस्तानियों को सुपरिचित कराने के काम में लगी थीं।

वर्ष 1957 तक इंटरमीडिएट स्तर तक की विज्ञान तथा गणित की पढ़ाई हिन्दी में होने लगी। सन् 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया गया। साठ तथा सत्तर के दशक में देश में हिन्दी अकादमियों का गठन किया गया। विश्वविद्यालय स्तर तक के लिए पाठ्यसामग्रियों के सृजन हेतु बड़े स्तर पर समेकित प्रयास किये गये। शिक्षा के लिए गठित कोठारी आयोग ने शिक्षा के लिए मातृभाषाओं की वकालत की। इससे भी हिन्दी के लिए अनुकूल माहौल बना।

हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकों का सृजन

सन् 1847 में रुड़की में इंजीनियरिंग कॉलेज के खुल जाने से हिन्दी में प्रविधि की पुस्तकों की जरूरत महसूस की गयी। वर्ष 1854 में सर चार्ल्सवुड की नवीन शिक्षा योजना के तहत भारत भर में अनेक ग्राम पाठशालाएं स्थापित हुईं। इन स्कूलों में भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। सन् 1856 के बाद सितारे हिन्द, राजा शिवप्रसाद ने अनेक पाठ्यपुस्तकों की रचना की। गणित, कृषि, दस्तकारी आदि से सम्बन्धित विषयों पर अनेक पुस्तकें वर्ष 1857 में हिन्दी में लिखी गयीं। सन् 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन के बाद 1858 में भारत का राजपाट ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ से सीधे ब्रिटिश पार्लियामेंट के सुपुर्द कर दिया गया। आर्यसमाज की 1867 में स्थापना भारत के राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आंदोलन था। इसने भारतीयों को शैक्षिक नवचेतना प्रदान की। आर्यसमाज ने हिन्दी के हितों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा दिया। सन् 1870 के दशक में पं.लक्ष्मीशंकर मिश्र तथा महामहोपाध्याय पं.सुधाकर द्विवेदी ने गणित तथा भौतिकी पर उच्च स्तर की पुस्तकें लिखीं।

सन् 1857 में देश में तीन विश्वविद्यालय, बंबई, कलकत्ता तथा मद्रास में खोले गये। इन संस्थाओं में कार्यरत भारतीय अपनी भाषा में विषयगत पुस्तकों के बारे में सचेष्ट रहते थे। इसलिए उनके निजी प्रयासों से भारतीय भाषाओं के लिए राह खुली। सन् 1868 में लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सर जेम्स थॉमसन ने पहल करते हुए इंजीनियरिंग की पुस्तकों के लिए विशेष प्रोत्साहन दिये जाने की घोषणा की। ध्यान रहे कि रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज पूरे एशिया महाद्वीप का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज था। वहां का सिविल इंजीनियरिंग विभाग बहुत समृद्ध था। वहाँ से निकले अभियंताओं ने गंगनहर जैसे चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा किया जिसमें गंगा नदी के ऊपर से नहर निकाली गयी। यह इंजीनियरिंग का अद्भुत नमूना था। गौरतलब है कि सबसे पहले देश में रेल लाइन रुड़की में बिछायी गयी थी। इसमें मालगाड़ी के जरिये नहर निर्माण की सामग्री पहुंचायी जाती थी। आधुनिक हिन्दी कविता के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' (1871) में विज्ञान विषयक लेखों को प्रकाशित करना शुरू किया। सन् 1900 में 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के साथ हिन्दी में विज्ञान लेखन को बहुत प्रोत्साहन मिला। सन् 1910 में प्रयाग में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना से भी हिन्दी में ज्ञान-विज्ञान संबन्धी लेखन को बल मिला।

हिन्दी अंचलों में परिवर्तन के प्रयास

सन् 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इससे हिन्दी प्रदेशों में उच्च शिक्षा का माहौल बना। वर्ष 1893 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा का गठन किया गया। इसने विज्ञान विषयों के लिए शब्दावली तैयार करने, तथा तकनीकी शब्दों के मानकीकरण की दिशा में बहुत उल्लेखनीय कार्य किया। सन् 1902 में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हुई। वर्ष 1907 में इस संस्थान द्वारा महाविद्यालय खोलने के साथ ही हिन्दी में संबन्धित विषयों की किताबों की जरूरत महसूस की गयी। सन् 1909 से 1912 तक रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा विद्युतशास्त्र पर हिन्दी में किताबें लिखी गयीं। इससे स्नातक स्तर पर इन विषयों की पढ़ाई संभव हो पायी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अलग-अलग विषयों के चार महानुभावों के प्रयासों से वर्ष 1913 में विश्वविद्यालय परिसर के पास ही विज्ञान परिषद् प्रयाग की स्थापना हुई। ये संस्थापक थे; डॉ. गंगानाथ झा (संस्कृत), प्रो. हमीदउद्दीन (अरबी), प्रो. सालिगराम भार्गव (भौतिकी), तथा प्रो. रामदास गौड़ (रसायन विज्ञान)। परिषद् की स्थापना के तीन साल बाद ही सन् 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना ने समूचे परिदृश्य को बदल दिया। विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, शिक्षा में भारतीयता के समर्थक थे। वे भारतीय जीवन मूल्यों से संपृक्त शिक्षा व्यवस्था चाहते थे। इसलिए उन्होंने व्यवस्था की कि इस संस्था में विज्ञान, साहित्य, मानविकी, समाजविज्ञान, ललित कलाओं के साथ-साथ तमाम भारतीय ज्ञान परंपराओं तथा शास्त्रों की शिक्षा दी जाए। इस तरह बीसवीं सदी के शुरूआत से हिन्दी प्रदेश में शैक्षिक गतिविधियों के लिए बेहतर परिस्थितियां बनीं। माध्यमिक स्तर तक की पढाई के लिए तमाम पुस्तकें लिखी गयीं। इस दौरान देश की साहित्यिक पत्रिकाओं में विज्ञान विषयक लेख भी खूब लिखे गये।

स्वातंत्र्योत्तर प्रयास

वर्ष 1947 में देश को आजादी मिलने के बाद हिन्दी में विज्ञान शिक्षा के प्रयासों ने गति पकड़ी। वर्ष 1957 तक इंटरमीडिएट स्तर तक की विज्ञान तथा गणित की पढ़ाई हिन्दी में होने

लगी। सन् 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया गया। साठ तथा सत्तर के दशक में देश में हिन्दी अकादमियों का गठन किया गया। विश्वविद्यालय स्तर तक के लिए पाठ्यसामग्रियों के सृजन हेतु बड़े स्तर पर समेकित प्रयास किये गये। शिक्षा के लिए गठित कोठारी आयोग ने शिक्षा के लिए मातृभाषाओं की वकालत की। इससे भी हिन्दी के लिए अनुकूल माहौल बना। ग्रेजुएट स्तर तक की शिक्षा हिन्दी में सुनिश्चित की गयी। कोशिश थी कि स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षा तथा तदनन्तर शोधकार्य भी हिन्दी में हों। इसके लिए कोशिशें भी खूब हुईं। पाठ्यपुस्तकों के अलावा सहायक सामग्रियों के निर्माण को बहुत गति मिली। केन्द्र तथा राज्यस्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं में भी हिन्दी माध्यम के छात्रों के लिए पाठ्यसामग्रियों का व्यापक तौर पर लेखन तथा प्रकाशन हुआ। उस समय प्रतियोगी पत्रिकाएं प्रचुर मात्रा में छपती थीं। दिल्ली, मेरठ, आगरा, तथा इलाहाबाद प्रतियोगी पत्रिकाओं के प्रकाशकों के गढ़ थे। उस समय छपने वाली पत्रिकाओं की सूची लम्बी है। छात्रों के पास हर तरह की सामग्री के लिए कई किताबों तथा पत्र-पत्रिकाओं के विकल्प थे। हिन्दी माध्यम से पढ़े छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छी सफलता प्राप्त कर रहे थे। हिन्दी के लिए परिस्थितियां काफी सहायक तथा अनुकूल थीं। इलाहाबाद जैसा शहर हिन्दी पट्टी के प्रतियोगी छात्रों का पसंदीदा स्थान था। वहां से हर साल हजारों प्रतियोगियों का सरकारी सेवाओं में चयन होता था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा पूरब के कैंब्रिज की थी। अस्सी के दशक के अंत तक स्थितियां बहुत आश्वस्तकारी थीं। लगता था कि हिन्दी को ज्ञान विज्ञान में उसका यथोचित स्थान प्राप्त हो जाएगा। लेकिन नब्बे के दशक के शुरू में वैश्वीकरण, उदारीकरण, व्यावसायिक शिक्षा तथा शिक्षा जगत में निजी संस्थाओं के प्रवेश के साथ परिस्थितियां बिलकुल पलट गयीं, जिसका नतीजा आज हम सभी के सामने है।

उदारीकरण के शैक्षिक मायने

उदारीकरण के साथ शिक्षा का समूचा परिदृश्य बदलने लगा। सरकारों ने शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसे लोककल्याणकारी कार्यों से अपने कदम पीछे करने शुरू कर दिये। शिक्षा के समवर्ती

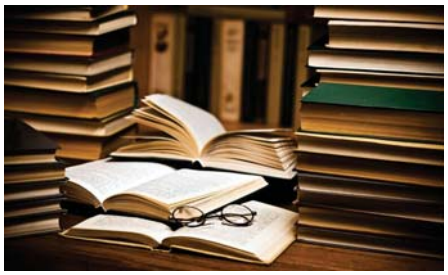

संख्या की दृष्टि से पुस्तकें खूब लिखी गयी हैं। लेकिन साथ ही यह मानना होगा कि गुणवत्ता के पैमाने पर अधिकांश साहित्य खरा नहीं उतरता। यह मानने में हमें संकोच नहीं होना चाहिए कि हिन्दी में लिखी गयी विज्ञान की अधिकांश पुस्तकें गुणवत्ता के पैमाने पर कमजोर हैं। अधिकांश किताबों में संदर्भ नहीं दिये गये होते। बहुत सारी सामग्रियां अंग्रेजी सामग्रियों की नकल होती हैं।

सूची में होने से केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने इसे निजी क्षेत्र के हवाले करना शुरू किया। नौकरशाही ने शिक्षा को एक तरह से अनुत्पादक निवेश माना। वित्तीय अनुशासन के नाम पर शिक्षा के मद में कटौती की गयी। सन 1980 के दशक से देश में शिक्षा पर कुल बजट का 6 प्रतिशत खर्च करने की बात कही जाती रही है। वह आदर्श कागजों तक सीमित रहा। आज भी शिक्षा पर खर्च देश के कुल बजट का बमुश्किल 3.5 प्रतिशत ही है। निजी क्षेत्र के लिए खोल दिये जाने से प्राइवेट स्कूल, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों की बाढ़ आ गयी। गाँव गाँव में कॉन्वेन्ट स्कूल खुलने लगे। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों ने हिन्दी माध्यम के छात्रों को अपनी ओर खींचना शुरू कर दिया। इंजीनियरिंग, मेडिकल, फॉर्मेसी, तथा प्रबन्धन जैसी संस्थाएं हजारों की संख्या में खुलीं। सब जगह शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहा। व्यावसायिक पाठ्यक्रम वाली संस्थाएं ही निजी क्षेत्र द्वारा खोली गयीं। इसकी मुख्य वजह व्यावसायिक थी। ये व्यावसायिक कार्स निवेशकों के लिए कमाऊ थे। वहां मोटी फीस वसूलने की पूरी-पूरी गुंजाइश थी। अगर वर्ष 2021 के उपलब्ध आंकड़ों पर गौर करें तो पायेंगे, कि देश में इस समय कुल 1115 विश्वविद्यालय हैं। इनमें 54 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तथा 416 राज्य विश्वविद्यालय हैं। निजी क्षेत्र में कुल 361 तथा 125 सम-विश्वविद्यालय हैं। देश में कुल 23 आईआईटी तथा 31 एनआईटी हैं। इस समय देश में कुल 6124 इंजीनियरिंग/तकनीकी कॉलेज, तथा 562 मेडिकल कॉलेज हैं। कहना न होगा, इन व्यावसायिक संस्थानों में शिक्षा तथा पाठ्यक्रम अंग्रेजी में हैं। देश में चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, भेषजविज्ञान, प्रबन्धन के सभी कोर्स करीब-करीब अंग्रेजी में ही हैं। यत्र-तत्र इसके कुछ एक अपवाद हैं जहाँ संस्थाओं ने इन विषयों के हिन्दी में पठन-पाठन के लिए प्रयास किये हैं। इनमें वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, तथा भोपाल के अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय के नाम प्रमुखता से लिये जा सकते हैं।

विज्ञान लेखन के व्यक्तिगत तथा संस्थानिक प्रयास

आज भाषा तथा मानविकी के विषयों को छोड़कर करीब सभी विषयों के शोधकार्य अंग्रेजी में हो रहे हैं। जाहिर है, शोधपत्र तथा पत्रिकाएं भी प्रायः अंग्रेजी में हैं। अब तो समाजविज्ञान तथा मानविकी के विषयों की पढ़ाई भी धीरे--धीरे अंग्रेजी में होने लगी है। फिर भी निजी तथा संस्थानिक प्रयासों से कई शोध पत्रिकायें हिन्दी में आ रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी कई पत्रिकाएं अच्छी सामग्री के साथ प्रकाशित हो रही हैं। देश में लोकविज्ञान की सर्वाधिक व्याप्ति तथा बिक्री की पत्रिकाएं हिन्दी में हैं। इनमें सरकारी तथा गैरसरकारी पत्रिकाएं दोनों शामिल हैं। वर्ष 2001 में दिल्ली की संस्था, राष्ट्रीय विज्ञान संचार तथा सूचना स्रोत संस्थान, से प्रकाशित एक निर्देशिका के अनुसार उस समय हिन्दी में विज्ञान की कुल 10,000 पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें विज्ञान की लगभग हर विधा पर अनेकानेक पुस्तकें लिखी गयी हैं। अगर विगत दो दशक के व्यापक तथा विस्तृत लेखन को भी जोड़ लिया जाए तो उसमें हजारों पुस्तकें और जुड़ गयी होंगी। विज्ञान परिषद् प्रयाग के अनुसार इस समय देश में कुल 3000 विज्ञान लेखक हैं। इनमें 150 महिला विज्ञान लेखिकाएं भी हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि संख्या की दृष्टि से पुस्तकें खूब लिखी गयी हैं। लेकिन साथ ही यह मानना होगा कि गुणवत्ता के पैमाने पर अधिकांश साहित्य खरा नहीं उतरता। यह मानने में हमें संकोच नहीं होना

चाहिए कि हिन्दी में लिखी गयी विज्ञान की अधिकांश पुस्तकें गुणवत्ता के पैमाने पर कमजोर हैं। अधिकांश किताबों में संदर्भ नहीं दिये गये होते। बहुत सारी सामग्रियां अंग्रेजी सामग्रियों की नकल होती हैं। ज्यादा लिखने की दौड़ में भी लेखन-धर्म का पालन नहीं हो पाता। कुछ लेखक हर उस विषय पर लिखते हैं जो कि उनकी शिक्षा या विशेषज्ञता का क्षेत्र नहीं है। हाँ, कुछ लेखक ऐसे हैं जिन्होंने खूब मेहनत करके मौलिक लेखन किया है। उनकी पुस्तकें आज भी उतने ही आदर से पढ़ी जाती हैं तथा उनका उद्धरण दिया जाता है। विज्ञान परिषद् प्रयाग ने विज्ञान पर शताधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। भोपाल स्थित आइसेक्ट विश्वविद्यालय ने अनुसृजन परियोजना के तहत अनेक पुस्तकें देश के विषय-विशेषज्ञों से लिखवाई हैं। संस्था का यह प्रयास सचमुच अनुकरणीय तथा स्तुत्य है। भोपाल स्थित एकलव्य संस्था, शिक्षा के क्षेत्र में कई दशकों से कार्यरत है। उसके तीन नियमित प्रकाशन हैं, बच्चों के लिए मासिक पत्रिका, चकमक, अखबारों हेतु सामग्रियों का संकलन, स्रोत, तथा शिक्षा विमर्श पर केंद्रित पत्रिका शैक्षणिक संदर्भ।

विज्ञान के लोकव्यापीकरण में सर्वाधिक प्राचीन पत्रिका 'विज्ञान' है जो अप्रैल 1915 से नियमित छप रही है। इसका प्रकाशन विज्ञान परिषद् प्रयाग द्वारा किया जाता है। इसी संस्थान द्वारा एक शोधपत्रिका का भी हिन्दी में प्रकाशन होता है जो त्रैमासिक है तथा विज्ञान परिषद् अनुसंधान पत्रिका के नाम से छपती है। सीएसआईआर की संस्था राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 'विज्ञान प्रगति' नामक मासिक विज्ञान पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इसे हिन्दी की सर्वाधिक बिक्री तथा व्याप्ति वाली पत्रिका के तौर पर जाना जाता है। कहा जाता है कि इसके स्वर्णिम काल में एक समय इसकी बिक्री का आंकड़ा एक लाख प्रति माह को पार कर गया था। भोपाल से प्रकाशित 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए', विगत 33 वर्षों से निरन्तर छपने वाली पत्रिका है। इसकी देश भर में व्यापक व्याप्ति है तथा करीब 40,000 प्रतियां हर माह छपती हैं। निजी प्रयासों से चलने वाली यह सर्वाधिक सफल तथा समादृत पत्रिका है। समय की बारंबारता, गुणवत्ता तथा छपाई की दृष्टि से यह

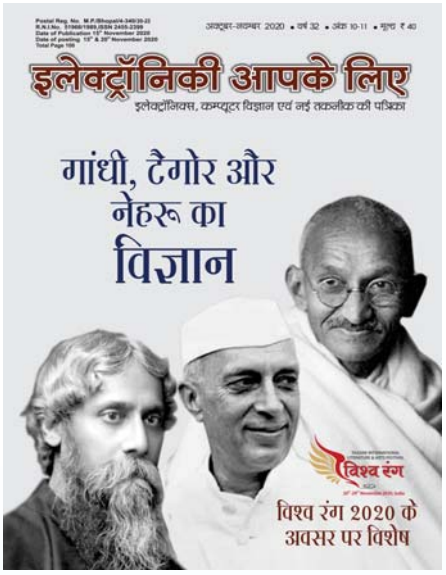

उत्तम कोटि का प्रकाशन है जिससे देश भर के सभी सुप्रतिष्ठित लेखक जुड़े हैं।

होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र मुंबई स्थित टाटा मलभूत अनुसंधान संस्थान का राष्ट्रीय केन्द्र है जो विज्ञान शिक्षा तथा लोकव्यापीकरण की दिशा में 1974 से सक्रिय है। इस संस्था के वैज्ञानिकों ने लोकविज्ञान के विषयों पर अनेक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। संस्था ने होमी भाभा प्राथमिक विज्ञान पाठ्यक्रम कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक कक्षाओं के लिए गणित तथा विज्ञान की किताबें तैयार की हैं। साथ ही माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों के लिए विज्ञान विषय हेतु सहपाठ्यचर्यात्मक पुस्तकों का प्रणयन किया है। परमाणु और विकास, शीर्षक से अनूदित पुस्तक परमाणु ऊर्जा विभाग, द्वारा तैयार की गयी है। विज्ञान के इतिहास पर केंद्रित पुस्तक 'विज्ञान- मानव की यशोगाथा' शीर्षक से होमी भाभा केन्द्र द्वारा तैयार की गयी है। इन किताबों के बारे में ध्वविस्तृत जानकारी इस लेखक द्वारा संचालित ई-लर्निंग पोर्टल (https://vigyanshiksha.in) पर उपलब्ध हैं। इस वेबसाइट पर होमी भाभा केन्द्र द्वारा विकसित की गयी तमाम शैक्षिक सामग्रियां उपलब्ध हैं।

कोरोना काल में विज्ञान साहित्य

कोरोना के वैश्विक संकट के इस दौर में साहित्यिक गतिविधियों ने नयी दिशा में मुख मोड़ लिया हे। सामाजिक दूरी बनाने की शर्त के चलते बहुत-सी पत्रिकाएं सिर्फ आनलाइन ही छपती रही हैं। कुछ ने सीमित संख्या में ही प्रतियां छापने का निर्णय लिया। पत्र-पत्रिकाओं की सॉफ्टकॉपी लोगों के ई-मेल तथा व्हाट्सऐप पर सुलभ होती रही हैं। साइबर स्पेस ने लेखकों, रचनाकारों को एक आभासी दुनिया उपलब्ध करा दी है। लोग घर बैठे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, ब्लॉग वगैरह पर अपनी बात लिखते रहे हैं। वास्तव में डिजिटल दुनिया ने लोगों को पठन-पाठन के नये तरीकों से जोड़ दिया। छात्र घर बैठे पढ़ रहे हैं। शिक्षक घरों से ही पढ़ा रहे हैं। लिखने पढ़ने वाले घर से ही सक्रिय हैं। वास्तव में कोरोना काल में डिजिटल युक्तियों ने लोगों को ऐसा साधन सुलभ करा दिया कि हजारों लोग साइबर स्पेस में लेखनकर्म से जुड़े हैं, वैचारिक आदान-प्रदान कर रहे हैं, रचनाएं लिख रहे हैं, पाठकों से साझा कर रहे हैं, परस्पर प्रतिक्रियाओं से रूबरू भी हो रहे हैं। देखा जाए तो साइबर दुनिया ने लोगों को घनघोर निराशा के संभावित घटाटोप से बचाने में महती भूमिका निभायी है। कल्पना करें कि आज यदि ये साधन न होते तो घरों की चारदीवारी में सिमटे जनमानस पर कितना दुष्प्रभाव पड़ता। कोरोना से जुड़े विज्ञान साहित्य खूब लिखे जा रहे हैं। तमाम पत्र-पत्रिकाएं, बुलेटिन, न्यूज़लेटर, वगैरह तैयार किये जा रहे हैं। कोरोना के वैज्ञानिक पक्ष पर आम लोगों की जिज्ञासा शांत करने के प्रयास जारी हैं। वैक्सीन को लेकर कितना कुछ विज्ञान साहित्य वेबसाइटों पर उपलब्ध हैं। तमाम वैज्ञानिक पत्रिकाओं ने कोरोना पर विशेषांक निकाले। विज्ञान संस्थाओं ने कोरोना पर ई-संगोष्ठियां आयोजित कीं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने परिचर्चाएं कीं, लोगों के प्रश्न लिये, विशेषज्ञों द्वारा प्रश्नकर्ताओं की शंकाओं का समाधान किया। किसी भी अन्य साहित्य की तरह विज्ञान साहित्य का भी मूल भाव कल्याणकारी है। इसका प्रयोज्य सर्व मंगल है। विज्ञान साहित्य का अभीष्ठ है नागरिकों को भय, भूख, बीमारी, अज्ञान, अंधविश्वास, तथा दकियानूसी विचारों तथा रूढ़ियों से मुक्त करना। लेकिन यह एक दिन में होने वाला कार्य नहीं है। यह वास्तव में एक लम्बी यात्रा है जो मानव समाज के सफर के साथ लगातार चलती रहने वाली है। इस यात्रा में पड़ाव तो हो सकते हैं, लेकिन अंतिम मंजिल नहीं। अस्तु, चरैवेति, चरैवेति ।

vigyan.sahityakaar@gmail.com